विदर्भ हिन्दी
लोकार्प
मधु-छंद
(काव्य संग्रह)
अध्यक्ष
डॉ. वेदप्रकाश मिश्रा
(कुलपति – कराड़ विद्यापीठ)
दिनांक 10 जनवरी
विदर्भ हिन्दी साहित्य

रोज नहाकर स्वर्ण से, हिमालय है निहाल ।
स्वर्ण रश्मियाँ बाँटता, करता भानु कमाल ॥

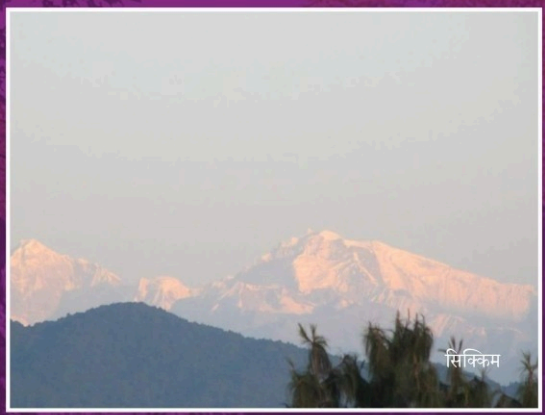
सिक्किम

मारिशस

अस्ताचल को रवि चला, सपना एक सहेज।
होगा संध्या से मिलन, आँखो में है तेज॥

खेल खेल उत्स नदी, बादल सेके धूप ।
लदी बर्फ से वादियाँ, इनका रूप अनूप ॥

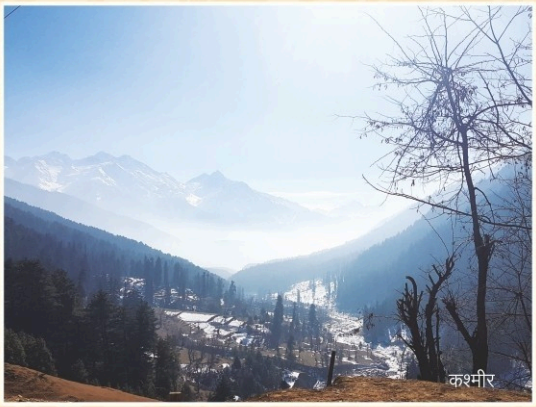
कश्मीर

नागपुर

चाँद पूरे शबाब पर, है पूनम जो संग ।
दूधा से नहाया हुआ, है चाँदी सा अंग ॥

रूप मनोहर प्रकृति का, करता भाव विभोर ।
हो जाये नयन भी चकित, जब हो ऐसी भोर ॥

भुटान

मारिशस

आये ऊर्जा स्त्रोत बन, सूरज सबके देश।
भर उजास की पोटली, बाँटे सकल प्रदेश ॥

देखकर के छवि अपनी, रवि के मन में मोद ।
सबसे विदा लेकर, चला अस्ताचल की गोद ॥

फुटाला (नागपुर)

स्विजरलेन्ड

ढकी बर्फ से वादियाँ, देती है संदेश।,
कैसे भी हालात हो, रहना हर परिवेश।

लगी झड़ी बरसात की, सूरज मन हर्षाय ।
चलो आज फुर्सत मिली, थोड़ा सा सुस्ताय ॥

नागपुर

मारिशस

जल बहुतेरे रूप में, खेल करे दिन रात ।
कभी समुद्र में जा मिले, कभी करे बरसात ॥

सागर है ऊफान पर, नदियाँ सरल स्वभाव ।
फिर भी सागर में मिले, रखे समर्पण भाव ॥

मॉरिशस

भेड़ाघाट

थके नहीं निर्झर कभी, बहता है दिन रात ।
सबको जल ये बाँटता, नहीं पूछता जात ॥

उड़ते घन मदमस्त ये, झूमे इनका अंग ।
नभ में किल्लोल करते, खुली हवा के संग ॥

मुंबई

नागपुर

बीच कंटक में रहकर, हँसता रहता फूल ।
खिलना मूल स्वभाव है, चुभे भले ही शूल ॥

भोर की किरण सुनहरी, जाती सबके देश ।
रहे भावना कर्म की, देती है संदेश ॥

नेपाल

नेपाल

पितातुल्य रहता अटल, हिमालय है महान ।
भर कर उर में ताल को, बाँटे जीवन दान ॥

घन आच्छदित देखकर, बढ़े उत्साह अपार ।
बरसे जब ये झूमकर, सुखी रहे संसार ॥

सोयी लिल्ली ताल में, अलसाई सी रात ।
खिलकर मिली सूरज से, जाग गये जज्बात ॥

कपसीले बादल सजे, आकाश है निहाल ।
निरखे छवि इक ताल में, जिसका रूप विशाल ॥

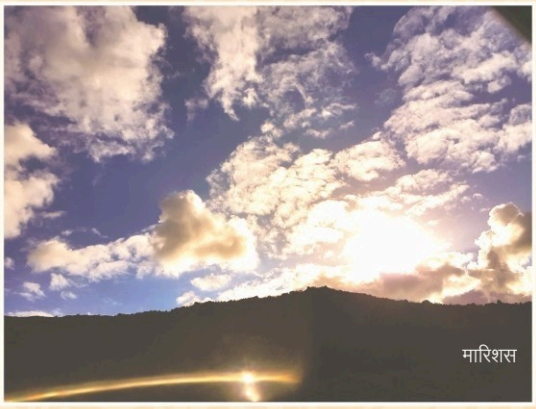

देख अजूबे प्रकृति के, हो जाते हम दंग ।
बिखरे एक पठार पर, कई अनगिनत रंग ॥

दरख्तों के झुरमुट में, रवि-संध्या की बात ।
दोनों की छवि सुर्ख है, है मुखरित जज्बात ॥

कश्मीर

कश्मीर

नदी-नारी समान है, रखे सरल की रूप ।
जैसा भी अवसर मिले, ढ़ले उसी अनुरूप ॥

खूबी इक पाषाण में, बिना हिले ही काज ।
रखे धरा को जोड़कर, है उसको भी नाज ॥

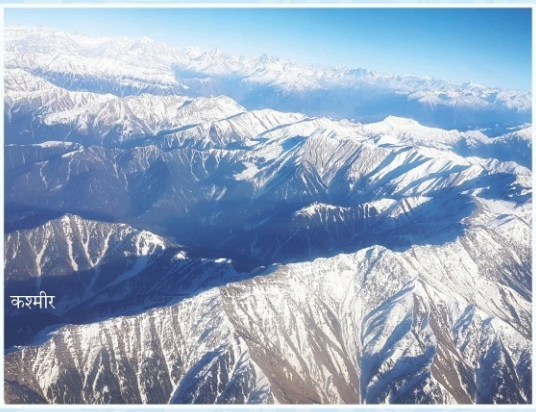
कश्मीर

सिक्किम

कतरा कतरा जोड़ कर, बने निसर्ग अनूप ।
रखना इसे संभाल कर, ये ईश्वर का रूप ॥

अजूबा ये निसर्ग का, द्वार बडा चितचोर ।
तार दिल के स्तब्ध हुए, नाचे मन का मोर ॥

देता है निसर्ग सदा, रखना उसका ध्यान ।
लेना कृतार्थ भाव से, करना है सम्मान ॥

उम्रदराज वट वृक्ष ये, घनी बाँटता छाँव ।
अनुभव है गहरा उसे, जुड़े धरा से पाँव ॥

मे रूप निराली प्रकृति, फैली चारों ओर ।
मनमोहक ये दृश्य है, करता भावविभोर ॥

मिलते घन जा समुद्र से, करते ऐसे खेल।
हो धरा पर क्रांति हरित, जीवनदायी मेल॥

नीर कभी पाथर घिसे, पाथर रोके नीर ।
कौन भारी कब किस पे, अपनी-अपनी पीर ॥

सागर है ऊफान पर, नदिया सरल स्वभाव ।
फिर भी सागर में मिले, रखे समर्पण भाव ॥

पतझड़ चला समेट कर, जो हो गया खराब ।
बसंत लाया हूबहू, मन में जो थे ख्वाब ॥

ऋजुता

कोपल फूटे नेह की, सींचे स्नेहिल भाव।
बीज पड़े विश्वास का, भर दे मन के घाव।।
भर दे मन के घाव, रहे कितने भी गहरे।
ऋजुता जब मन भाय, हटे मायावी पहरे।।
चिंतन की "मधु" बात, सदा रखना मन कोमल।
प्रकृति का नियम एक, बीज से फूटे कोपल।।

मधु सिंघी

द्वेष की गाँठे

आँधी चले विरोध की, सबसे बड़ा अधर्म।
बढ़ती मन दुर्भावना, बँध जाते फिर कर्म।।
बँध जाते फिर कर्म, भाव की शुभता हरते।
होता नहीं सुधार, पाप की गठरी भरते।।
स्वयं बैठ "मधु" खोल, द्वेष गाँठें जो बाँधी।
सहज रहे जब सोच, क्रोध की रुकती आँधी।।

मधु सिंघी

धैर्य

जीवन में जो भी घटित, सहज करें स्वीकार।
वरना मन में क्लेश की , खड़ी रहे मीनार ।।
खड़ी रहे मीनार, बोझ मन का बन जाती।
लगे वक्त की मार, चुनौती यही सताती।।
कहती है "मधु" बात, धैर्य का भर लें ईंधन।
सहनशीलता साथ, रहे समतामय जीवन।।

मधु सिंघी

दोस्ती
रहता नाता मीत से, मन से होता जोड़।
सच्चाई पर ये टिका, सिर्फ प्रेम की होड़।।
सिर्फ प्रेम की होड़, रहे दिल से ये नाता।
कदर बड़ी अनमोल, सभी को मन से भाता।।
कहती है "मधु" बात, प्रेम बस हिय में बहता।
निकट लगे है मित्र, जुड़ा ये मन से रहता।।
Happy
Friendship day

सुंदर रूप निसर्ग का, ये सतरंगी जाल।
आँखों में ही बस गया, देखे रंग कमाल।।

मधु सिंघी

प्राणी सब तल्लीन हैं, निश्चित सबका काल।
अपने-अपने कर्म के, बुनते हैं सब जाल।
मधु सिंघी

गिरता जब हिम पेड़ पर, मिले पात की गोद।
जैसे माता-लाल मिल, करते मोद-प्रमोद।।
मधु सिंघी

संध्या रूप सुहावना, विलुप्त होती धूप।
लघु सूरज है बाल सा , बादल पंछी रूप।।
मधु सिंघी

कटकर रूखे ये शज़र, करे आपसी बात।
मनुज निरंतर काटता, बचता कैसे गात।।
मधु सिंघी

दो पर्वत ऐसे दिखे, मुख सा है आकार।
क्रोधी जैसे देखते, जंग आर या पार।।

मधु सिंघी

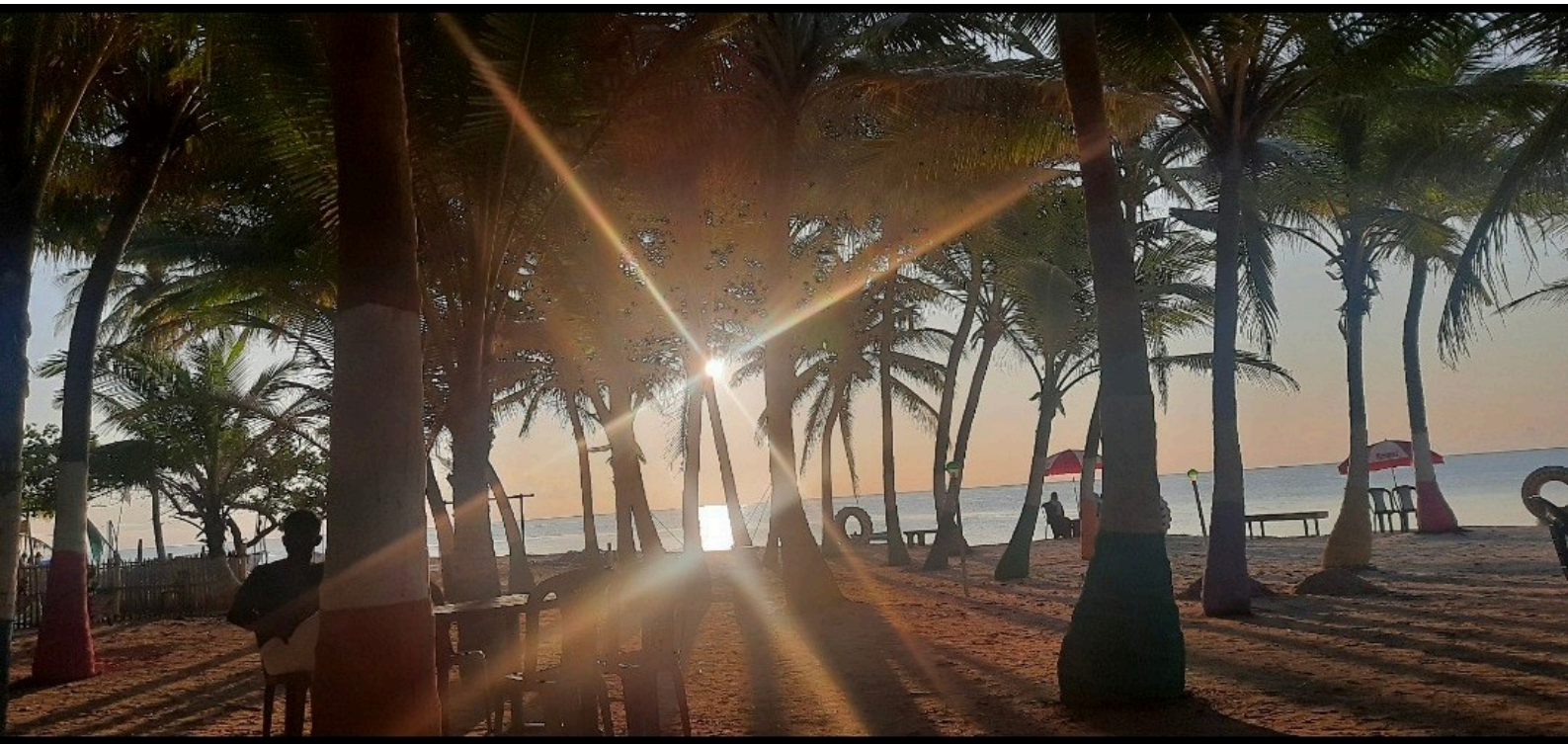

सूरज किरणें खेलती, हुई पेड़ के पार।
लगता रूप सुहावना, कैसा ये आकार।।
मधु सिंघी

सागर तल में देखना, परछाईं निर्बाध।
मुश्किल से ही बन सके, ऐसी छवि एकाध।।
मधु सिंघी

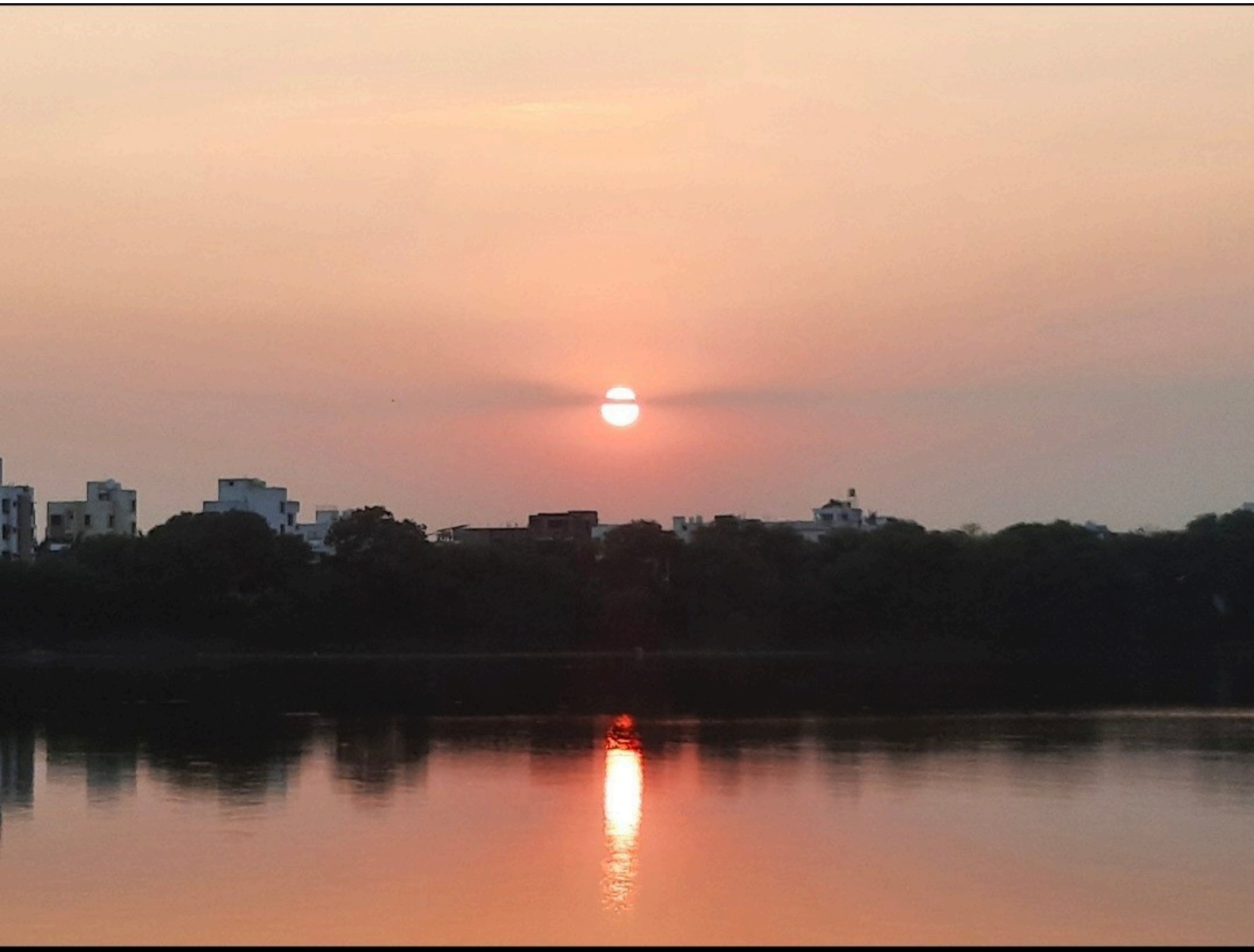

है रूपगर्विता प्रकृति, संग ताल-आकाश।
सूरज घट बन छा गया, बादल पिये प्रकाश।।
मधु सिंघी

सुंदर झूमर है टिका, निखर गया आकाश।
ऐसी सज्जा जलद की, फैला मंद प्रकाश।।
मधु सिंघी

सूरज इत-उत खेलता, छिप बादल की ओट।
तेज छुपता यदा-कदा, घटत-बढ़त की चोट।।
मधु सिंघी

भेड़ों के झुँड में मिला , खोई खुद पहचान।
सिद्धा स्वयं न बन सका, कहाँ बचा फिर मान।।
मधु सिंघी

बरगद उपकारी बड़ा,औषध गुण अपार।
पत्ते इसके हैं गुणी, रोगों का उपचार।।
मधु सिंघी

फूल अनोखा ये बना,मखमल सा अहसास।
ये उपहार निसर्ग का, रंग इसी का खास।।
मधु सिंघी

पर्वत पितु वत है खड़ा, बादल बालक रूप।
करता घन अठ खेलियां, दे छाँव कभी धूप।।
मधु सिंघी

झाँके सूरज ताल में, देखे खुद ही रूप।
दृश्य विहंगम ये बना, दर्पण एक अनूप।।
मधु सिंघी

सूरज ऐसे रूप में, नित नव संध्या काल।
किरणें फैली पुष्प सी, निसर्ग करे कमाल।
मधु सिंघी

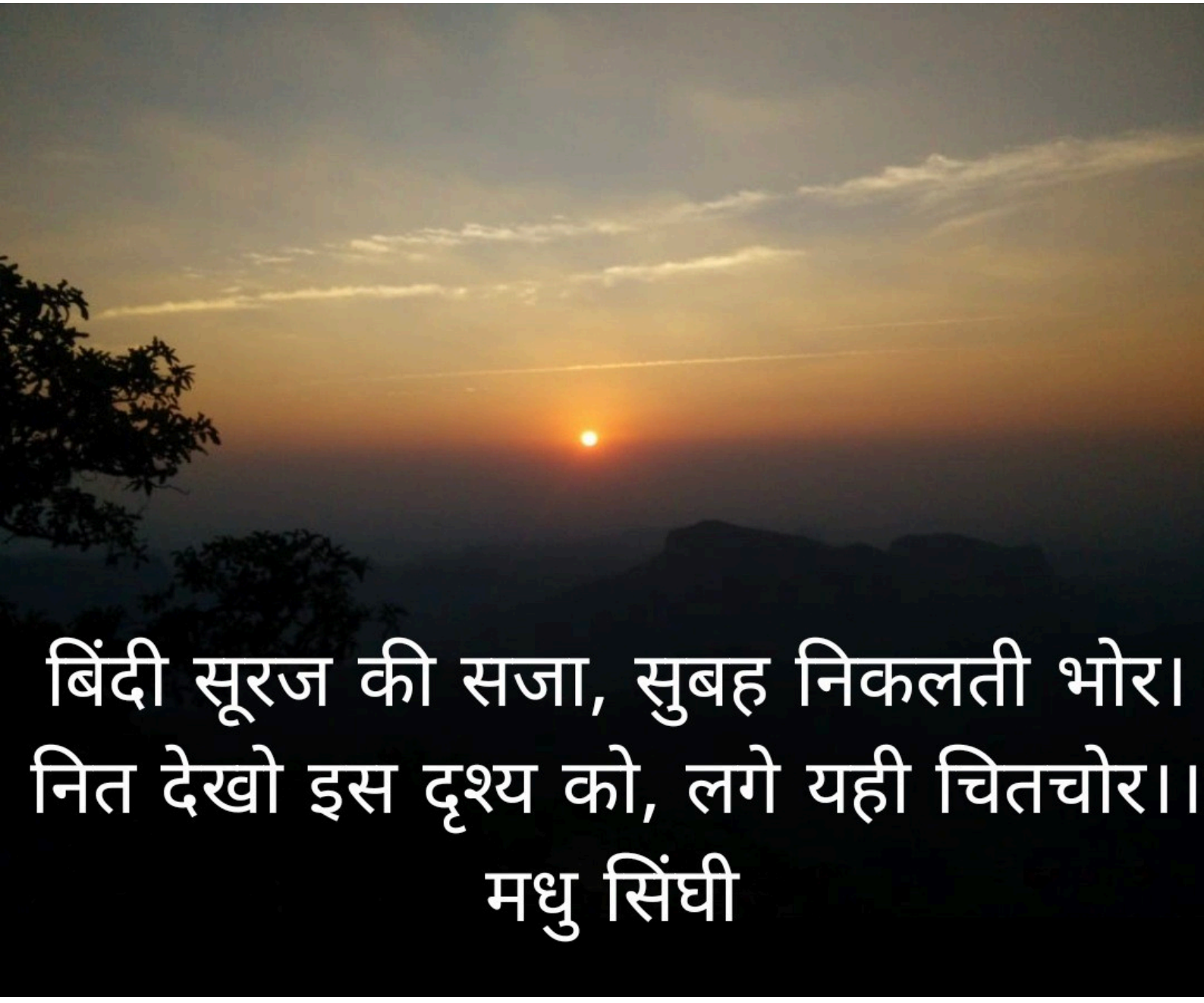
बिंदी सूरज की सजा, सुबह निकलती भोर।
नित देखो इस दृश्य को, लगे यही चितचोर।।
मधु सिंघी

बादल ॐआकार में, देखा पावन आज।
नाद गगन में गूँजता, नित्य बजाये साज।
मधु सिंघी

मानव निर्मित झौंपड़ी,रहना आये रास।
जितना निसर्ग के निकट,यही सुखद अहसास।।
मधु सिंघी

ज्ञानार्जन है साधना, मिलता है सम्मान।
माँ सरस्वती साथ हो,बड़े सहज ही ज्ञान।

Samrupan
SHIKSHA SE SAMANATA KI AUR

संस्थापक
मधु सिंघी

पत्थर से तुम हो बने,मुझमें बसती जान।
कुर्बानी देनी मुझे ,तुम पर सब कुर्बान।।
मधुसिंघी
।। राम।।

जन्म लिया था कृष्ण ने ,
करने जग उद्धार।
जरूरत आज फिर पड़ी , ले
लो अब अवतार।।
मधुसिंघी

गुरु की महिमा है बड़ी ,करते
नहीं निराश ।
मन में रखकर नम्रता,पायें
ज्ञान प्रकाश।।
मधुसिंघी

मित्र सदा मिलते रहें ,गम हों कोसों दूर।
ईश्वर का वरदान ये,ऊर्जा से भरपूर।।

मधुसिंघी

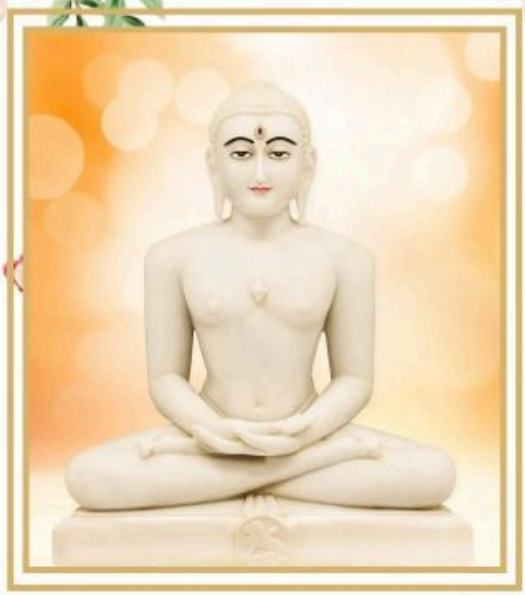

॥ ॐ ॥

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच णमुक्कारो
सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवई मंगलं

BOOK LAUNCH

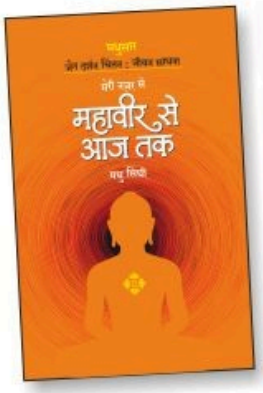

मधुसार
जैन दर्शन चिंतन : जीवन साधना
मेरी नज़र से

महावीर से आज तक

Author
Madhu Rajendra Singhi

माटी से बनता घड़ा, घड़ता जो कुम्हार ।
कलाकार है वो बड़ा, दे देता आकार।।
दे देता आकार, ममत्व उसे हो जाता।
बिकता माटी मोल, रहे बस इतना नाता।।
गहरी है 'मधु' जान, यही मोहनीय घाटी।
एक दिन तो विछोह, मिले माटी में माटी।।

श्री आदिनाथाय नमः

अंदर बाहर आग है, जला रही है साथ।
चाहेंगे तो बुझ सके, ये है अपने हाथ।।
ये है अपने हाथ, शमन इसका भी होगा।
प्रयत्न हो दिन रात, श्लोक चालीस दरोगा।
कहती है मधु बात, पाठ भक्तामर सुंदर।
मंत्र पढ़ें जब साथ, छूटते विकार अंदर।।

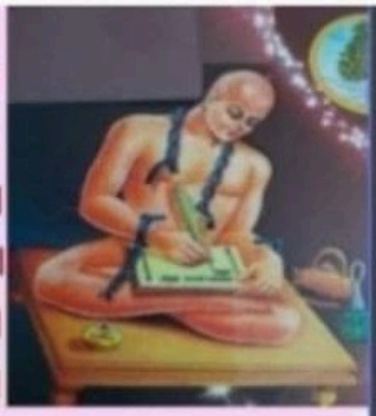

भक्तामर श्लोक 40

कल्पांत-काल पवनोद्धत-वन्हि-कल्पं,
दावानलं ज्वलित-मुज्ज्वल-मुत्स्फुलिंङ्गम्।
विश्वं जिघत्सु-मिव सम्मुख-मापतन्तं,
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम्।।

धागा धागा जोड़कर
गठबंधन ये खास ।
भाई - बहन प्यार का
बंधन आया रास ॥

रक्षा के इसधागे में
अटूट है विश्वास ।
साथ सदैव बना रहे
जब तक रहे श्वास ॥

मधु सिंघी

सूखी झाड़ी में खिला,
अद्भुत देखा फूल।
कोमल मखमल सा दिखे,
नहीं लगी है धूल।।
मधु सिंघी

खेले मन की भावना,
नित नया ही खेल।
सोच समझ कर काम ले,
सुख है रेलमपेल।।

मधु सिंघी

"राम नवमी विशेष"

हर दिल में रहता है रावण, और रहता है राम।
बुराइयों पर विजय पताका, जीत जायेगा राम।।
सुंदर जीवन हो फिर सबका, सफल सबके हो काम।
राम नाम की फेरो माला, भजते रहो बस राम।।

मधु सिंघी

कल्पित भय की सोच से, बढ़ता मन का रोग।
बैठे बिगड़े काज भी, फिर पछताये लोग।।
फिर पछताये लोग, मन से उलझते रहते।
कर्मठता को छोड़, अपने दुख को सहते।।
कहती है 'मधु' बात, सोच हो कल की अल्पित।
भूत छोड़ कर काज, नहीं आज है कल्पित।

मधुसिंघी

गुरु की महिमा है बड़ी,
करते नहीं निराश।
मिल जाये आशीष तो,
विस्तृत ज्ञान प्रकाश।।

मधुसिंघी🙏🙏

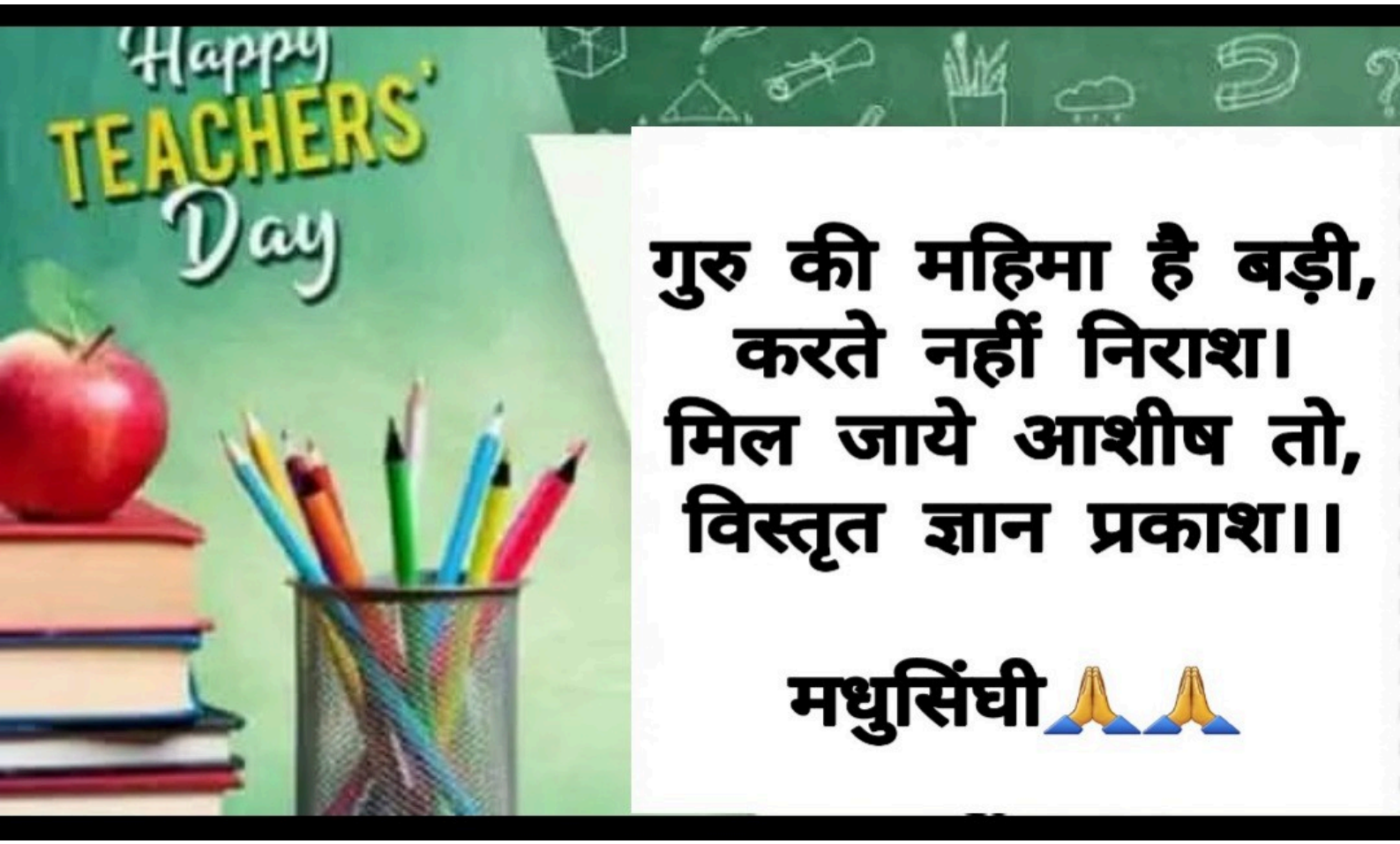
Happy
TEACHERS'
Day
गुरु की महिमा है बड़ी,
करते नहीं निराश।
मिल जाये आशीष तो,
विस्तृत ज्ञान प्रकाश।।
मधुसिंघी🙏🙏

Happy friendship day

रिश्ता रहता मीत से, दिल से होता जोड़।
सच्चाई पर ये टिके, सिर्फ प्रेम की होड़।।
सिर्फ प्रेम की होड़, बात गुन लो बस इतनी।
कदर बड़ी अनमोल,रखो संभाले जितनी।।
कहती है "मधु" बात, प्रेम कैसे ये बिकता।
अनूठा लगता मित्र, नेह का सच्चा रिश्ता।।

मधुसिंघी

धागा है विश्वास का, राखी जिसका नाम।
पावन ऐसा ये बना, जैसे चारों धाम।।
मधु सिंघी

श्री आदिनाथाय नमः

अंदर बाहर आग है, जला रही है साथ।
चाहेंगे तो बुझ सके, ये है अपने हाथ।।
ये है अपने हाथ, शमन इसका भी होगा।
प्रयत्न हो दिन रात, श्लोक चालीस दरोगा।
कहती है 'मधु' बात, पाठ भक्तामर सुंदर।
मंत्र पढ़ें जब साथ, छूटते विकार अंदर।।

1	शुक्ल लेश्या	सफेद	केवल ज्ञानी
2	पद्म लेश्या	पीला	तप, शील, संयम, त्याग, ध्यान
3	तेजो लेश्या	लाल	स्पष्टवादी, अध्ययनरत,ज्ञानी,परोपकारी, दयालु
4	कापोत लेश्या	स्लेटी	दोहरा व्यक्तित्व,आत्मप्रवंचना में लीन,
5	नील लेश्या	नीला	पाखंडी, लालची, लोभी,स्वार्थी
6	कृष्ण लेश्या	काला	क्रोध ,क्रूरता, घृणा, आलस्य, अहंकार

भक्तामर श्लोक 40

कल्पांत-काल पवनोद्धत-वन्हि-कल्पं,
दावानलं ज्वलित-मुज्ज्वल-मुत्स्फुलिंङ्गम्।
विश्वं जिघत्सु-मिव सम्मुख-मापतन्तं,
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम्।।

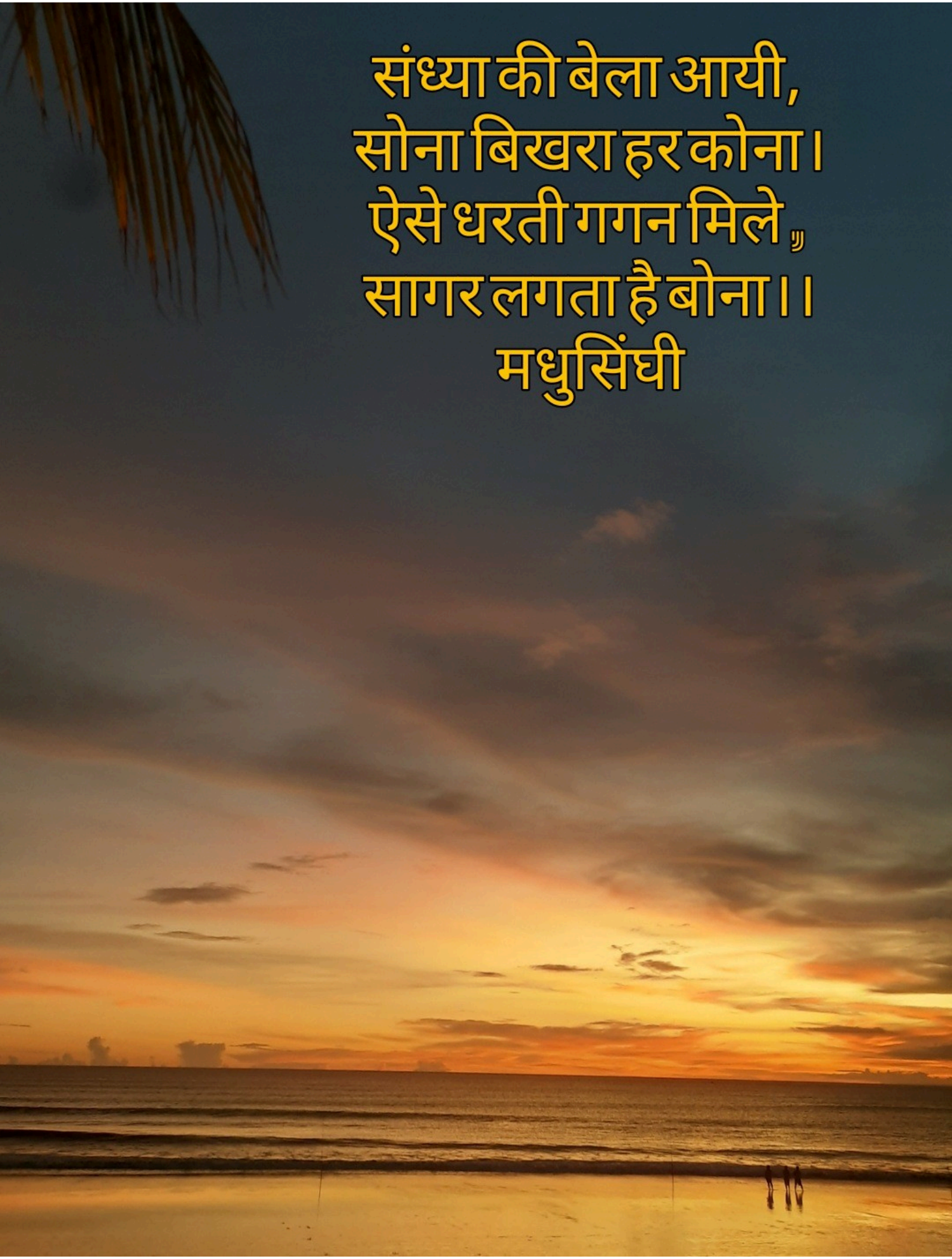
संध्या की बेला आयी,
सोना बिखरा हर कोना।
ऐसे धरती गगन मिले,
सागर लगता है बोना।।
मधुसिंघी

निज आत्मा की बात सुन,ये बल अपरंपार।

उलझी बातें सुलझती, सुखमय हो संसार।।

सुखमय हो संसार, हर्ष मिल जाये सबको।

बाँटे जितना ज्ञान, मिले उतना भी हमको।।

कहती है "मधु" बात, रहे संग फिर परमात्मा।

खुशियाँ चारों ओर, तृप्त होती निज आत्मा।।

मानव कब पत्थर बने,
पत्थर कब भगवान।
समय समय का खेल है,
देख हुए हैरान।।

मधु सिंघी

मानव यदि विशेष रहे, या फिर कोई आम।
मोलभाव संसार में, सबका अपना दाम।।
सबका अपना दाम, किसी को कम मत आँकें।
अपना करें सुधार, स्वयं के अंदर झाँकें।।
हट जाये "मधु" आज, छुपा जो दिल में दानव।
सभी गुणों की खान, मान क्यूँ करता मानव।।

मधु सिंघी

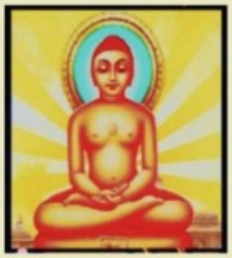

बहती धारा वक्त की , बहता सब कुछ जाय।
विपदा आन पड़े कभी , बुत बन कर रह पाय।।
बुत बन कर रह पाय , नहीं क्रंदन मन करता।
चिंतन सरल प्रवाह , सहज द्वंद्व भी हटता।।
कहती है "मधु" बात , चीज हर नश्वर रहती।
बांधे मन तटबंध , नदी समता की बहती।।

मधु सिंघी

महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं

चलते सच के साथ जो , रखे अहिंसा मान।
अस्तेय अपरिग्रह नियम , ब्रह्मचर्य का भान।।
ब्रह्मचर्य का भान , सदा रहता सुखदायी।
जीवन की है शान , सदाचारी फलदायी।।
जो नहीं "मधु" सुधार , हाथ फिर रहता मलते।
कभी न मनु पछताय , साथ नियमों के चलते।।

मधु सिंघी

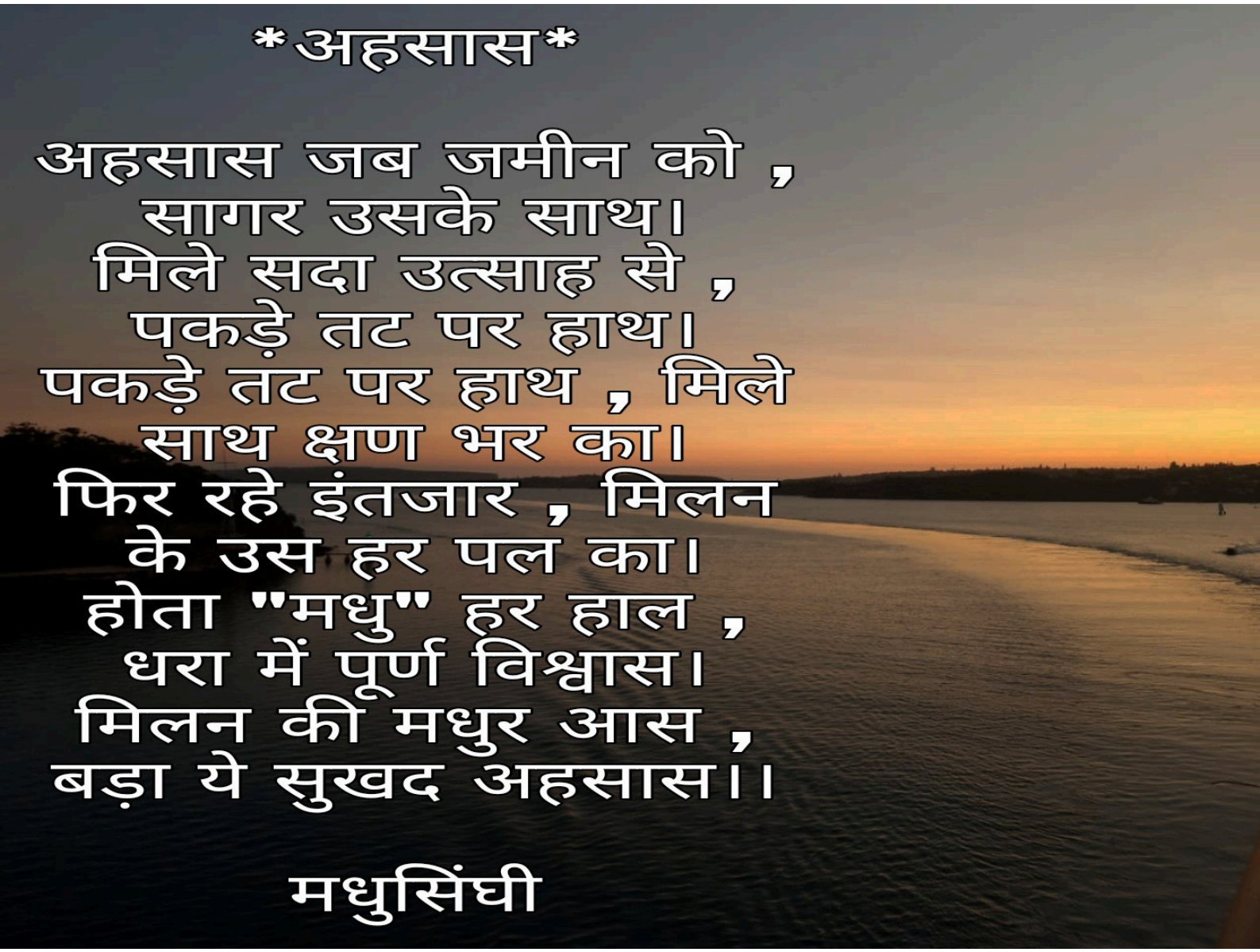
अहसास
अहसास जब जमीन को ,
सागर उसके साथ।
मिले सदा उत्साह से ,
पकड़े तट पर हाथ।
पकड़े तट पर हाथ , मिले
साथ क्षण भर का।
फिर रहे इंतजार , मिलन
के उस हर पल का।
होता "मधु" हर हाल ,
धरा में पूर्ण विश्वास।
मिलन की मधुर आस ,
बड़ा ये सुखद अहसास।।
मधुसिंघी

निखरी ऐसी झाड़ियाँ, दमका इनका रूप।
रवि ने रंग निखार के, बनाया है अनूप।।
मधुसिंघी

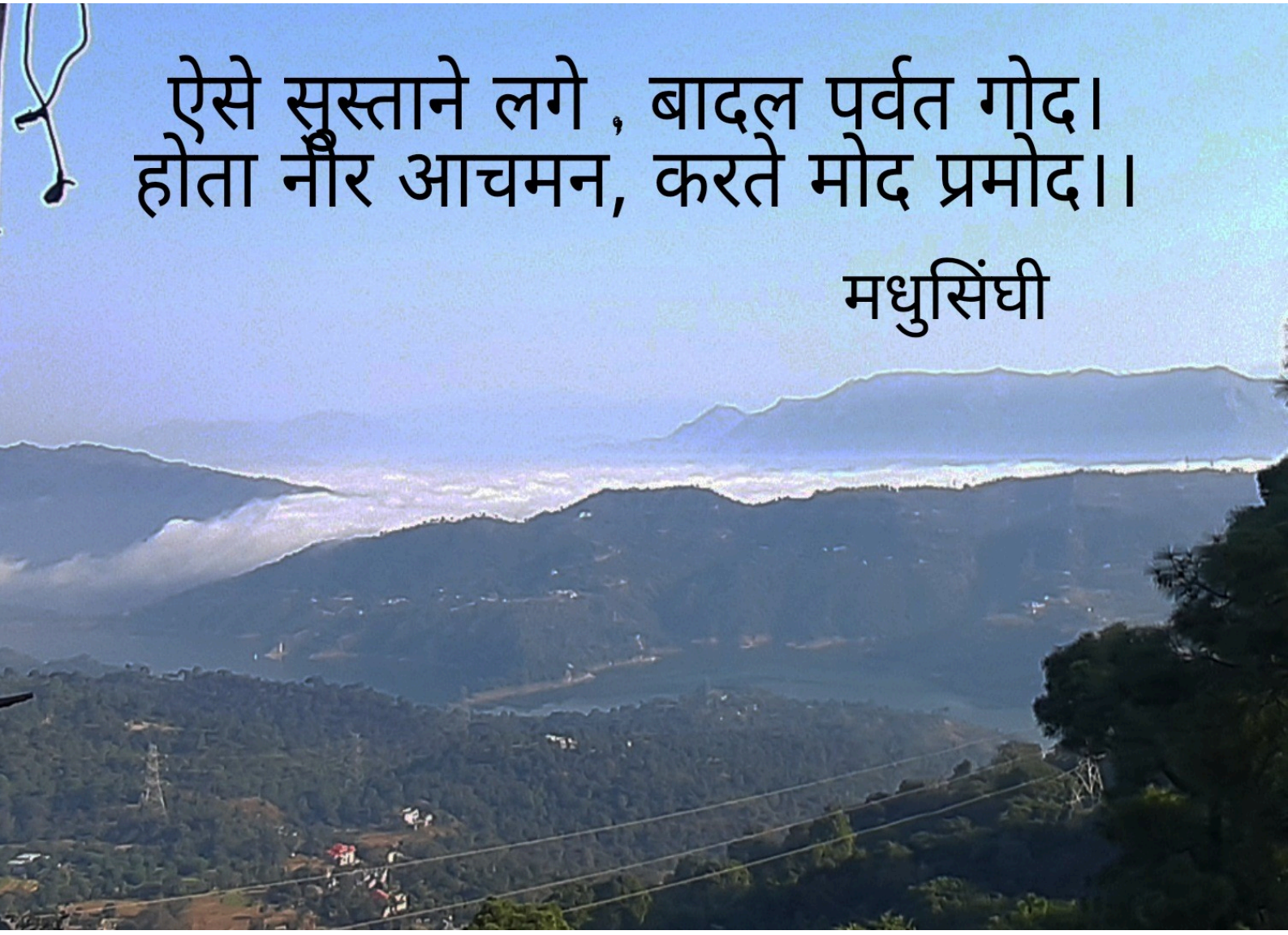
ऐसे सुस्ताने लगे , बादल पर्वत गोद।
होता नीर आचमन, करते मोद प्रमोद।।
मधुसिंघी

सकारात्मक सोच से,
होते कई कमाल।
दिल से अगर प्रयास हों,
सुलझे सभी सवाल।।
मधुसिंघी

जिस दिन जागे सुप्त मन,
जीवन की है भोर।
कर्म-कूची रंग भरे,
नाचे मन का मोर।।
मधु सिंघी

शिक्षक दिवस विशेष

ज्ञानी गुरुवर सीख दे, हर्षित मन तैय्यार है।
डूबी सागर बीच में, नैया फिर भी पार है।।

ज्ञान छुपा हर सीख में, आप हमारे गुरु सदा।
लेकर बैठे आपसे , सुखकर है वो संपदा।।

मधुसिंघी

"मधु कथ्य"

मन का लालच रह गया , करवाता है भोग।
अति हो जाती भोग की , लग जाते हैं रोग।।
लग जाते हैं रोग , कहाँ फिर भी रुक पाते।
काया होती क्षीण , लोभ तो सदा सताते।।
करना तप "मधु" नित्य , रहे स्फुरण फिर तन का।
धुल जाते हैं मैल , मिटता संताप मन का।।

मधुसिंघी

काया-रथ

काया रूपी रथ बना, इंद्रियाँ अश्व रूप।
मन बनके जो सारथी, चले रथ छाँव-धूप।।
चले रथ छाँव-धूप , थके नहीं वह कभी भी।
सुख विषयों की चाह,दौड़ रहा है अभी भी।।
चिंतन की "मधु" बात,अजब है मन की माया।
मन दौड़े हर राह, क्षीण होती है काया।।

मधुसिंघी

सुख–दुख

कभी तपता रवि सा दुख तो ,
कब दस्तक दे अपने सुख साज।
कहीं मनु तो दिखता दुख में,
सहते कितने मन में सब राज।
कभी रहते अपने खुश तो,
कब दे अपने फिर कंटक ताज।
चले यह खेल सदा मन में,
कितना हम सोच रखें यह आज।

मधुसिंघी

Happy friendship day

रिश्ता रहता मीत से, दिल से होता जोड़।
सच्चाई पर ये टिके, सिर्फ प्रेम की होड़।।
सिर्फ प्रेम की होड़, गुनलो बस बात इतनी।
कदर बड़ी अनमोल, संभाले रखो जितनी।।
कहती है "मधु" बात, प्रेम कैसे ये बिकता।
अनूठा लगता मित्र, नेह का सच्चा रिश्ता।।

मधुसिंघी